वर्ष 27 अंक 2 फ़रवरी-2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका

पशुपति बन गये रुद्र, भजन कर रुद्र सतत ।
पावन भक्त ठहर गये, रुद्र नायनार नित ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

आजीवन सदस्य ₹ 1000/- (20 वर्ष)

वर्ष 27, अंक 02 | मूल्य ₹ 3/- | फ़रवरी - 2025

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414
0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
दिल चुराओ 7
पता नहीं...क्यों ? 8
रामबाण 10
दादा-पोते की कहानी 11
बजट 12
तृप्ति बोलो 13
हर हर गंगे 14
माँ वागेश्वरी 15
दो ग़ज़लें 16
मधुरभाव विकासिनी ! 17
हिन्दी भारत की पहचान 18
सब कुछ ईश्वर देख रहा 19
कैसा सुकून 19
आदतें बन ही जाती हैं... 20
प्रयागराज महिमा 21
धूप 22
कविताएँ 23
अब कहाँ ? 24
पूर्णिका (आँखें) 24
नये युग में... 25
जीवन 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
कहाँ चले जा रहे 30
गर्व 31
प्यारी शान है हिन्दी 31
सीताराम 32
वक्त 32
मेहनत 33
स्वयं के व्यक्तित्व पर नाज़ करना है 34
पुनर्मिलन 35
पौत्र 35
जीवन संघर्ष 36
बहुत दूर जाना है 36
चिंतन भोले का 37
राम मेरे आयेंगे 37
अन्तर्ज्वाला 38
माता संतोषी वंदन मनहरण घनाक्षरी 38
तुम पर है 39
लक्ष्य पर तेरा निशाना हो 39
नारी तो नारी है 40
पतले काका 40
क्यों गीत गाना भूल गया तू । 41
जल (पानी) 42
पाठकों के पत्र 42
नवांकुर 43
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम् . 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஏப்ரல்-2025	20-04-2025	01-01-2025 to 28-02-2025	05-03-2025
ஜூலை-2025	20-07-2025	01-04-2025 to 31-05-2025	05-06-2025
அக்டோபர்-2025	26-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025
ஜனவரி-2026	18-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பம் மற்றும் தேர்வு கட்டணம் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (www.shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ D.D. மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.

Kindly pay exam fee only through
our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

आज की दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का चलन जिन्दगी से संबंधित हर क्षेत्र में व्यापित है । शिक्षा के क्षेत्र से लेकर हर क्षेत्र में इसका प्रभाव दिन ब दिन बढता जा रहा है । कोई इस तथ्य को कभी नकार नहीं सकता कि आज की इस जिन्दगी में इसका प्रभाव नहीं है । आजकल लिखने से लेकर सुनने, सीखने, करने, कराने, नाचने, नचवाने की प्रक्रियाएँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता से बने साधनों से चलाये जा रहे हैं । दुनिया के अनेकानेक कंपनियाँ सिर्फ अपने उपयोग के लिए ही नहीं बल्कि आम जनता की उपयोगिता के लिए भी अनेकानेक साधन बनाकर रखे हैं ।

एक तरफ देखेंगे तो इन साधनों से मानव को ही नहीं समस्त प्राणियों के साथ धरती को भी यह लाभदायक है । बहताधिक कम समय में उच्चतम लाभ पाना इन साधनों से संभव है । धरती के नीचे आकाश तक के बहुत सारे गुप्त विषयों को आसानी से आदमी तक लाने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का काम मानव को अचरच में डाल देता है । पलों में युगों का काम कर देने में इन यंत्रों का काम सवोपरी ठहर जाता है । एक ही समय में विभिन्न प्रकार का काम करने में भी ये माहिर सिद्ध हो चुके हैं । इनको देखकर मानव समुदाय सच में अचरच में पड चुका है ।

लेकिन खतरे की बात यह है कि इन यंत्रों ने लाखों करोडों लोगों का काम छुडवा सकते हैं । पचास या सौ आदमी का काम अकेले एक मशीन कर देता है । इससे सौ लोगों का कमाना बंद हो जाता है । बेरोजगारी बढने की संभावना बढ जाती है । लोगों को काम नहीं मिलने पर कमाने का रास्ता बंद हो जाने पर गरीबी से सताये जायेंगे और भूखमरी के शिकार बन जायेंगे । सरकार के साथ समाज को भी इस बात पर ध्यान देना होगा । सुविधाओं के साथ कठिन काम को सरल बनाना भी अत्यन्त जरूरी है । लेकिन दुनिया में जो भी काम चल रहा है वह पूरी तरह से मानव जाति को आगे बढाने के लिए है । लोका समस्ता सुखिनौ भवन्तुवाली भावना सबमें होना चाहिए । तभी जीवन सुखमय होगा ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

अनमोल वचन

खेती

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – अनेकानेक प्रकार के काम और प्यापार करने पर भी घूमती रहनेवाली यह दुनिया खेती के पीछे पडी रहती है। इसलिए दुख भोगने पर भी खेती ही सबसे प्रधान कर्म है।

खेती ही इस दुनिया के सबसे प्रधान कर्म है। अन्य कर्म करने पर भी खेती के बिना पेट की भूख नहीं मिटा सकते। इसलिए दुनिया रूपी गाड़ी का यही कीला है जो पहिये को धुरिये के साथ बना रखती है।

खेती करके जीनवाले ही इस दुनिया में जीनेवाले हैं। बाकी के सब लोग उनकी वंदना करके उनके पीछे जानेवाले होते हैं। अन्न के बिना मानव का जीना मुश्किल है।

अनेकानेक राजाओं के छत्रछाया को अपने छत्र के नीचे लाने की क्षमता रखनेवाले किसान होते हैं। उनके बिना यह जग आगे नहीं बढ सकता है।

अपने हाथ से खेती करके खानेवाले किसी के सामने खाने के लिए हाथ नहीं पसारते हैं। अपने सामने जो भी आकर कुछ माँगा करते हैं उनको कुछ देना ये कभी नहीं भूलते।

खेती बाढी करनेवाले किसान का हाथ काम किये बिना रुक जाये तो दुनिया की मोह माया से दूर हुए तपस्वी भी जी नहीं सकते।

खेत को बार बार जोतकर मिट्टी जो उडती है उसको एक का वाव बनाने लायक बार बार जोतकर सुखा देने से बिना किसी खाद उपज बहुत होगा।

खेत को जोतने से खाद डालना बेहतर है। दोनों के बाद वहाँ के अनचाहे पौधों को दूर कर पानी सींचने से उसकी रक्षा करना बेहतर है।

खेत का मालिक उससे जाकर नहीं मिले तो उसका जमीन उसकी पत्नी के समान उससे मुँह मोडेगा।

जो कहता है कि मेरे पास कुछ भी नहीं है और आलस से भरा रहता है उसे देखकर धरती भी हँसेगी।

दिल चुराओ

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

मेरा नहीं तेरा नहीं उसका भी सही
किसी का भी हो कहीं किसी स्थिति की हो
मन को लुभाता है दिल में सुकून भरता है
एक बार ही सही आपके मन में ही नहीं
देखनेवाले हर किसी इनसान के मन में
भाव नया भरता है सुख को यह स्थान देता है
खिल जाता है चेहरा, चेहरा सहित मन भी
मधुर मुस्कान से सबका मन हर बार हाँ यार ।

बच्चे के मुस्कान से मुश्किलें दूर हो जाती हैं
बहुत अच्छा बन जाता है माहौल तब हर रूप से
बडों के मुस्कान भी हर किसी को छू लेता है
खासकर दाँत के बिना दादी हो या दादा
मुँह खोलकर जब हँसते हैं मन खिलता है
हर चेहरे में यह मुस्कान जरूर सुख भरता है
हर तरह से मन यह सुख भरा बन जाता है
हँसी मुस्कान रिश्तों का सूत्रधार बन जाते हैं ।

एक बार मुस्कुराने से इंसानियत जग जाती
एक के नहीं सबके मन में यह भावना भरती
एक बार के मुस्कान से सद्भावना बढ जाती
एक मुस्कान वह एकता का कारण बन जाती
एक बार के मुस्कान से दोस्ती पनपने लगती
एक बार के मुस्कान से आपसी भेदभाव मिटती
एक बार की हँसी से भाई हर पल खिल जाता
एक बार नहीं बार बार मुस्कुराओ दिल चुराओ ।

पता नहीं...क्यों ?

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

पता नहीं इस आदमी को क्या हुआ ? धूप तो नहीं है लेकिन थोडी गर्मी जरूर है । अरे ! कभी कभी डर भी लगने लगता है कि अगर ये कहीं गिर जायें तो क्या करें ? हड्डी टूट जायेगी तो क्या करेंगे ? गिरकर मर जायेंगे तो जिन्दगी खतम हो जायेगी । देखो, अरे कोई तो रोको इन्हें । चलो मैं ही अन्दर चली जाती हूँ । कोई रोके या न रोकें यह तो मेरा फर्ज बनता है कि इस बुजुर्ग व्यक्ति को इस प्रकार नाचने और दौडने से रोकें और उनके स्वास्थ्य की रक्षा करूँ । यह सोचते हुए रक्षा गेट खोलकर उस मैदान के अन्दर घुस गयी ।

गेट के अन्दर घुसते ही वह अपने आपको भूल गयी । जिस काम के लिए आयी थी वह याद नहीं कर पायी । वहाँ नन्हे मुन्ने बच्चों के लिए खेलकूद चलाया जा रहा था । वर्दी से पता चला कि वह एक बाल विद्यालय है । वहाँ के प्री के जी, एल.के.जी. और यू.के.जी. बच्चों के लिए वहाँ प्रतिस्पर्धाएँ चलायी जा रही थी । बच्चे जो भी करते है अपने व्यवहार से सबका मन चुरा लेते हैं । वहाँ का नजारा कुछ अलग ही था । बहुत ही सुन्दर बच्चे वहाँ पैरेड कर रहे थे । बच्चों से यह सब करवाना सचमुच बडा काम है । जब वे मन लगाकर करने लगते हैं तब आप स्वर्ग को वहीं देख सकते हैं ।

रक्षा देखती रह गयी । वहाँ एक लडकी याने बच्ची हट कर रही थी कि मैक में उसे बात करनी है । वह तो टीचर के पीछे मैक देने के लिए बच्चों की ही शैली अपनाकर माँग रही थी । टीचर बोली – मान तुम इसमें कितना बात करोगे ? एक काम करो इन सबके खेलने के बाद एक बार फिर से मैक लेकर जो बोलना है बोल लेना । आश्चर्य मान चुपचाप बात मानकर चला गया । अभी रक्षा मन ही मन सोचने लगी – अच्छा हुआ । मैं इसे बच्ची कहकर संबोधित नहीं की । कुछ भी हो यह तो बहुत ही प्यारा बच्चा है । मान से नजर हटा नहीं पा रही थी कि एक एक करके प्यारे बच्चे प्रतियोगिता के लिए तैयार हो गये थे ।

तीन गोली रखकर तीनों गोलों में कुछ चीजें रखी गयी थीं । उन तीनों में रखी गयी चीजों को विधि के अनुसार ले जाकर उचित जगह में रखना था । बीच में कूदने और नाचने का भी क्रम रखा गया था । एक बार उन्हें समझाया गया कि क्या करना है और कैसे करना है ? वहाँ के सारे अभिभावक तब बच्चे बन गये ।

जिस तरीके से ये नन्हे मुन्ने बच्चे अपनी प्रतियोगिता मे भाग लेने पूर्ण मन से तैयार थे उसी तरह वहाँ के सारे दृष्टा अपने आपको उन प्रतियोगिताओं में सम्मिलित कर लेते थे । बच्चे जब नाचने लगते तब वहाँ के सारे लोग उसी तरह नाचने लगे । रक्षा भी यह भूल गयी कि वह किस काम के लिए वहाँ आयी है ? वह भी अपने आपको भूलकर नाचने लगी । सबके मुँह में हँसी छायी थी । सबके दिलों में उल्लास का लहर भरने लगी । वहाँ के सुमधुर दृश्य का वर्णन काफी मुश्किल था । रक्षा भी उसी लत में रम गयी ।

कुछ देर बाद जब वह अपने मोबाइल फोन में उस बुजुर्ग को नाचते हुए वीडियो ले ली और उन्हें दिखाते हुए बोली – देंखिए ! आप बच्चों के जैसे जितनी अच्छी तरह नाच रहे हैं ।

वीडियो देखकर उस बुजुर्ग व्यक्ति की हँसी और बढने लगी । कहने लगे – जिन्दगी में इससे अच्छे पल कैसे हो सकते हैं ? यही असली जिन्दगी है । दफतर में और जीवन में कितने लोगों को मैं अपने इशारों पर नचाता हूँ । लेकिन उसमें यह चैन और उल्लास नहीं है । आज मैं जितना खुश हूँ जिन्दगी भर में इतनी खुशी का अनुभव नहीं कर पाया हूँ । अपने पुत्र पुत्री के प्यार से पौत्रों के प्रति जो प्यार होता है वह काफी ज्यादा है । इस उम्र में पौत्रों के साथ रहना बहुत ही मजेदार होता है । लेकिन अफसोस की बात यही है कि आज संयुक्त परिवार कम हो रहा है । एकल परिवार में दादा–दादी या नाना–नानी को कहाँ स्थान मिलता है ? बिटिया – मेरा यह वीडियो हर कहीं फैलाओ । आज की नई पीढी को देखने दो कि बुढापे में असली मजा पौत्रों से आता है । कम से कम इससे वे अपने माता–पिता को अपने पास रखें । पता नहीं अचानक से रक्षा की आँखों से आँसू निकलने लगे ।

रामबाण

– श्री. मदन सुमित्रा सिंघल,
शिलचर, असम

जब भी कोई हम समारोह निजी विवाह शादी सालगिरह जन्म दिन मुहुर्त मे अतिथियों मित्रों रिश्तेदारों एवं शहर के लोगों को आमंत्रित करते हैं तो बजट बनाकर सब खर्च करते हैं । अमुमन अंदाजा लगाया जाता है कि उनसे हमें बीस पच्चीस प्रतिशत वापस उपहार एवं सगुन मिल जायेगा । आजकल नगद देने की परंपरा अधिक है क्योंकि बाजार मे अनावश्यक खरीददारी करने से समय नष्ट होता है ।

आयोजक को आमंत्रित लोगों को देखकर खुशी होती है कि आया तो कुछ तो लेकर आया लेकिन जो नहीं आये उनका दुख होता है समीक्षा होती है कि आजाते तो खा जाते अधिक नहीं तो कुछ तो अवश्य लाते लेकिन कारणों का पता नहीं लगता । खाने की बरबादी एवं नगद एवं उपहार ना मिलने की दोहरी मार से दुखी होना स्वाभाविक ही है । ऐसे मे निमंत्रण पत्र के एक पन्ने अथवा उसके पीछे क्यू.आर. कोड छपवाने से काफी फायदा होगा लोग शर्म से अवश्य भेज देंगे ।

व्यावसायिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों मे गुलदस्ते देनेवाले काफी अखरते है क्योंकि वो कोई काम नहीं आते, सुबह ही डस्टबिन मे फेंकने पड़ते है ।

15 साल पहले मैंने व्हाट्सएप मे निमंत्रण पत्र भेजने का फार्मूला दिया तो लोग हंसते थे लेकिन आज सभी अपना रहे हैं ऐसे ही यह फार्मूला रामबाण साबित होगा ।

तकदीर में जो कुछ है सिर्फ उसी को मानव अपनाता है
तकदीर में जो बिलकुल नहीं है
वह पास तक नहीं आ पाता है।

दादा-पोते की कहानी

– डॉ. निशा नंदिनी
भारतीय,असम

कलियुग की ही बात है । एक दादाजी अपने पोते को प्रतिदिन गीता का पाठ सुनते थे, पर पोते की समझ में कुछ नहीं आता था ।

वह बोला – दादाजी आप मुझे हर दिन यह जो गीता का पाठ सुनाते हो, मेरी कुछ समझ में नहीं आता है फिर भी आप हर दिन सुनाते हो ।

दादाजी ने कहा – कोई बात नहीं बेटा । वह सामने देख कोयले की काली सी टोकरी रखी है । पूरी काली हो चुकी है । उसमें सामने के नल से थोड़ा–सा पानी भर के ले आओ ।

पोता गया टोकरी उठाकर नल से पानी भर के लाया । जब वह पानी भर के लाया तो पानी पूरा गिर गया क्योंकि बांस की टोकरी थी ।

दादाजी ने कहा – कोई बात नहीं बेटा, इस बार दौड़ के लेकर आना । बेटा फिर गया, फिर पानी लाया और पानी फिर टोकरी से गिर गया ।

दादाजी ने कहा – बेटा हार नहीं मानना दुबारा जा । अबकी बार और तेज दौड़ के आना । फिर पोता पानी भर के लाया लेकिन लाते–लाते फिर पानी गिर गया ।

अब पोते ने कहा – दादा जी मुझे मालूम है इस बांस की टोकरी में पानी नहीं भरने वाला है । फिर भी आप मुझे बार–बार पानी लाने क्यों भेज रहे हो ।

दादाजी ने कहा – बेटा इस टोकरी में पानी तो नहीं भरेगा लेकिन देख कोयले की टोकरी थी कितनी काली थी । बार–बार पानी भरने से साफ हो गई । उसका रंग चमक गया ।

पोते ने कहा – दादा जी यह बात तो है टोकरी तो साफ हो गई ।

दादाजी बोले – बेटा मैं जो तुझे रोज गीता सुनाता हूँ । वह गीता पाठ तेरी समझ में आए या ना आए, कोई फर्क नहीं पड़ता, पर तेरा हृदय, तेरा चित्त जरूर स्वच्छ और पवित्र हो जाएगा ।

शिक्षा : किसी भी अच्छे काम को बार–बार करने या सुनने से ऐसा लाभ होता है जो हमें दिखाई नहीं देता ।

लघुकथा

बजट

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

पति–पत्नी रिक्शे में जा रहे थे, रास्ते में एक दुकान दिखाई पड़ी, पत्नी ने रिक्शे को दुकान के पास रुकवा दिया, पर्स से एक लिस्ट निकालकर पति को देकर बोली – यह लीजिए सभी सामान लेकर ठीक से पैक करवा लीजियेगा,

पति महोदय दुकान पर सामान ले रहे थे कि तभी उन्हें कुछ याद आया, पत्नी की ओर मुड़ कर पूछा – एक किलो सर्फ भी ले लूँ ?

– क्या करोगे ? पर्चे में लिखा है क्या ?

– लिखा तो नहीं है, पर घर में भी तो नहीं है, इसीलिए पूछा, कि शायद तुम लिखना भूल तो नहीं गयी,

– रहने दीजिये, मैं ले आयी हूँ,

– दिखाई नहीं पड़ा, कहाँ रखा था,

– चलिए, तो दिखाती हूँ,

– पति महोदय सामान को तुरंत पैक करा कर रिक्शे में आकर बैठ गए, रिक्शा चल पड़ा, अभी कुछ ही दूर गया होगा कि पत्नी कड़े शब्दों में कहा – तुम्हे कुछ होश भी है कि नहीं, अभी बच्चो की फीस जमा नहीं हुई, उसकी चिंता नहीं है, सर्फ लेने की चिंता है,

– पत्नी की बातो से पति महोदय को पता चल गया कि सर्फ कहाँ रखा है, इसीलिए वह चुपचाप पत्नी की बातों को रास्ते भर मौन रहकर सुनते रहे, उन्हें अब कहना भी तो कुछ न था ।

तेरे मेरे बीच में बंधन लाने का काम
हिन्दी ही करती है ।

तृप्ति बोलो

– श्री. भाऊराव महंत,
बालाघाट, म.प्र.

कोशिशें की सर्वदा तुमसे मिलन की लाख लेकिन–
दूर ही मुझसे रही क्यों ? खिन्न होकर, तृप्ति बोलो !

तुम रहा करती हो पुष्पित पुष्प के सौंदर्य में नित,
इसलिए मैं हर सवेरे बाग में मिलने गया हूँ ।
भिन्न पुष्पों से सुशोभित, भिन्न खुशबू से सुवासित,
वाटिका सौंदर्य को मैं देखकर विस्मित रहा हूँ ।
किन्तु अधिकृत इक सुमन में वास तुम करती नहीं हो–
क्यों ? भला रहती सभी में भिन्न होकर, तृप्ति बोलो !

तृप्ति तुम मुझको मिलेगी अंक माँ के इसलिए ही,
बचपने में गोद उसकी त्यागता किञ्चित नहीं था ।
तुम मिलोगी साथियों के खेल में मुझसे विहँसकर,
इसलिए ही साथ उनका छोड़ता किञ्चित नहीं था ।
हाय ! यौवन में तुम्हें तिय देह में ढूँढा बहुत पर–
खो बुजुर्गी में गईं तुम छिन्न होकर, तृप्ति बोलो !

लोग कहते द्रव्य में उपलब्ध तुम रहती हमेशा–
इसलिए मैं वित्त पाने भागता–फिरता रहा हूँ ।
ज्ञात मुझको जब हुआ तुम यश–प्रतिष्ठा वासिनी हो–
नींद खोकर, चैन खोकर जागता फिरता रहा हूँ ।
आज भी तुम जिंदगी में मिल कहीं जाओ अतः मैं–
नाचता हूँ, रोज तानाधिन्न होकर, तृप्ति बोलो !

हर हर गंगे

-श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

कल-कल कल-कल बहती मातु श्री गंगे,
उत्तुंग शिखर से लहराती आई प्राण तरंगे,
देवी भागीरथी माता अति पतित पावनी,
जय जय जय विष्णु चरणोद अमृत संगे ।

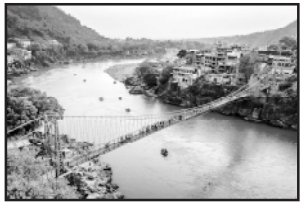

हर-हर हर-हर गंगे मंत्रोच्चारण कर ले मन से,
जन्म जन्मांतर के प्यासे फिर कभी न तरसे,
कृपामयी मंदाकिनी है ये साक्षात् मोक्षदायिनी,
पाप धुले सारे अनंत आनंद सुख निधि बरसे ।

भक्ति भाव से जो गंगा जी की आराधना करें,
स्नान, जप, ध्यान, कीर्तन और साधना करें,
दुःखनाशिनी देवपगा सदा ही आरोग्य वर्धिनी,
त्रिपथगा भव बाधाओं से पूर्णतया मुक्त करें ।

शशि, डमरू, सर्प, त्रिशूल महादेव के साजे,
जान्हवी तरंगिणी गंग माथ जटा जूट विराजे,
शोक निवारणी, पापहारिणी, सर्व सुखकारिणी,
महिमा गंगे की त्रिलोक मुनि, वेद, पुराण बांचे ।

परमवेगनी, रसातलनिवासनी शुभता निर्मले,
शुभा, ऊँकाररूपिणी श्रीदायै, सौभाग्यप्रदाये,
जगत्प्रिया, सर्वदेवपूजिता, पतितोद्धारिणी,
विनती करो स्वीकार दयालु गंगा महामाये ।

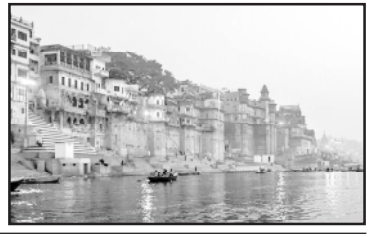

माँ वागेश्वरी

– श्री. ममता तिवारी,
छत्तीसगढ़

माँ सरस्वती अज्ञान हरो, करो मातु कल्याण...

स्वर सुधा में आकंठ डूब, करते हम गुणगान,
प्रज्ञा ज्योत पूंज ज्ञान देवि, मात धरे हम ध्यान,
हम सब लेखनी के पुजारी, मस मति का दे दान,
माँ सरस्वती अज्ञान हरो, करो मातु कल्याण ।

नैनों में है स्वप्न तरूण माँ, तेरे पग रख शीश,
श्रद्धा भक्ति की तुम्हे करूँ, अर्पण चंदन घीस,
माला प्रेम अश्रु का लेकर, पुष्प रखे नत माथ,
डालो दृष्टि राह हूँ वरदा, आओ सँग जगदीश ।
सुदूर क्षितिज में दिखता देखो, उड़ता हंस विमान ।
धवल वस्त्र सुंदर लहराता, बज रही वीणा तान...
माँ सरस्वती...

वेदों की वाणी गुंजाते, करता है हठयोग
पवन दे रहा साथ हमारा, सुंदर है संजोग,
आई वीनापाणी अम्बे, भक्तो जोडो हाथ,
देखो सारी सृष्टि उमंगित, आज लगा लो भोग ।
तंद्रा चेतना की स्वामिनी, उतरी जीवन प्राण,
झूम-झूम कर गा रे मनवा, माँ की सेवा गान...
माँ सरस्वती...

दो ग़ज़लें

– श्री. बृज राज किशोर 'राहगीर',
मेरठ, उ.प्र.

– 1 –

शराफ़त की हदों को पार मत करिए ।
जुबां को तीर या तलवार मत करिए ।
कई चीज़ें नज़रअंदाज़ कर दीजे,
ज़रा सी बात पर यलगार मत करिए ।
ख़लिश को ही बना ले ज़िंदगी अपनी,
किसी को इस तरह बीमार मत करिए ।
वफ़ा की झील में पानी कहाँ है अब,
हसीनों से निगाहें चार मत करिए ।
जड़ों को खोद देना ठीक रहता है,
गुनाहों की फ़सल तैयार मत करिए ।
चलो कुछ तल्ख़ियाँ हैं भाइयों में पर,
सहन के बीच तो दीवार मत करिए ।
बड़ी मजबूरियों में माँगता होगा,
ज़रूरतमंद को इंकार मत करिए ।

– 2 –

दवा की शक्ल में बिकता ज़हर, तुमको पता है क्या ?
लगी ईमान को किसकी नज़र, तुमको पता है क्या ?
पतन के रास्ते पर चल पड़ा पैसा कमाने को,
कहाँ जाकर थमा उसका सफ़र, तुमको पता है क्या ?
बना ली कोठियाँ, बिस्तर खरीदा कीमति उसने,
नहीं क्यूँ नींद आती रात भर, तुमको पता है क्या ?
बनाने जा रहा मंदिर गुनाहों की कमाई से,
मिला उसको कहाँ से ये जिगर, तुमको पता है क्या ?
बुढ़ापे में जवां बेटे–बहू को फूँककर आया,
हुआ है बद्दुआओं का असर, तुमको पता है क्या ?
बुरा हो या भला जो दे रहा है वो ज़माने को,
वही उसको मिलेगा लौटकर, तुमको पता है क्या ?

मधुरभाव विकासिनी !

– श्री. वल्लभ
यमुनेश्वरी, नैनपुर, म.प्र.

हे माँ नर्मदे ! मेकलसुते ! अनवरत प्रवाहिनी !
भक्त द्वारा आराध्य माँ ! सकल सुख प्रदायिनी !
अमरकंटकोद्भूत माँ ! वनीय सुषमा दायिनी !
साल-सागौनादि द्रुमों से, पर्यावरण संवाहिनी !
हे शिवात्मजे ! मुक्तिप्रदे ! भवसिंधुतारिणी !
ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि, देवों द्वारा आराधिनी !
जिजीविषा से परिपूर्ण मन को, सिंचित करो पयस्विनी !
ग्राम्य परिवेश में, हरीतिमा का दृश्य हो, स्रोतस्विनी !
हो जागतिक उत्थान, समन्वयी हो गान, प्रगतिपथ अनुगामिनी !
लोकसंस्कृति के संगीत को, नवचेतना के गीत को, जन-मन में प्रसारिणी !
अंचल की अस्मिता अक्षुण्ण हो , हर स्थली में पुण्य हो, हे नर्मदे मनभाविनी !
निर्धनताजन्य कष्ट को, तिमिराच्छादित परिदृश्य को, दूर करो तेजस्विनी !
हे मेकलसुते ! यह प्रार्थना ! सहअस्तित्व की हो भावना, दृढ़ात्मविश्वास प्रदान करो, ऊर्जस्विनी !
इहलोक की जो कामना, परलोक की जो चाहना, परिपूर्ण हो वरदायिनी !
हे माँ नर्मदे ! मेकलसुते ! मधुरभाव विकासिनी !
मानवीयता के परिवेश को, निसर्ग के संदेश को, अनवरत संचारिणी !

हिन्दी भारत की पहचान

– डॉ. राजेश कुमार शर्मा 'पुरोहित',
झालावाड़, राजस्थान

रजत सा चमके किरीट, भाल पर दमका करता ।
हिमगिरि है शोभित अडिग खड़ा रक्षा करता ।।

गंगा जमुना की धारा पाप सारे धो देती है ।
मोक्षदायिनी ये नदियाँ जीवन दान देती है ।।

हिन्दी भारत की पहचान ये देश की शान है ।
हिन्दी बोलें हिन्दी लिखें ये हमारी आन है ।।

प्राकृतिक सौंदर्य जहाँ का सबने मिलकर गाया है ।
ऐसा रम्य हिन्दुस्तान सबके मन को भाया है ।।

पद्मनी सी स्वामिभक्त भामाशाह सा दानी है ।
हर मानव ईश्वर का अंश जहाँ हर लोग ज्ञानी है ।।

केसरिया श्वेत हरा हमारा तीन रंग का झंडा है ।
इसको शीश झुका हम नित वन्देमातरम गाते है ।।

अहिंसा के बल पर हमने आजादी पाई है ।
कितने वीर शहीदों ने हँसकर गोली खाई है ।।

फाँसी के फंदे को चूम जिसने वन्दे मातरम बोला ।
ऐसे अमर शहीदों ने पहना था बासन्ती चोला ।।

तुमसे दूर जाकर मैंने बहुत कुछ पाया है
तुम्हारे साथ रहकर सिर्फ तुम में डूबा रहा था ।

सब कुछ ईश्वर देख रहा

– श्री. किशनू झा तूफान,
दतिया, म.प्र.

कितना सच है कितना झूठा, सब कुछ ईश्वर देख रहा ।
किसने माँगा किसने लूटा, सब कुछ ईश्वर देख रहा ।
हरदम सबके साथ खड़े थे, हरदम सबके लिए लड़े,
फिर भी सबका चेहरा रुठा, सब कुछ ईश्वर देख रहा ।
पीछे खंजर मारनेवाले, मुँह पर कितने मीठे हैं,
गिरगिट सा व्यवहार अनूठा, सब कुछ ईश्वर देख रहा ।
खास बने फिरते हैं जितने, आगे पीछे चलते हैं,
किसने कितना चाटा जूता, सब कुछ ईश्वर देख रहा ।
देखो पत्थर पूछ रहा है, दर्पण से चोटों का हाल,
आखिर दर्पण कैसे फूटा, सब कुछ ईश्वर देख रहा ।
किशनू समझ रहा है खोटे सिक्के कौन चलाता है,
किसका कहाँ गड़ा है खूँटा, सब कुछ ईश्वर देख रहा ।

कैसा सुकून

– श्री. देवेन्द्र पाल सिंह 'बर्गली',
नैनीताल, उत्तराखण्ड

गदराये हुए सेठ ने
चारों तरफ देखा
और फेंक दी
खाली शराब की बोतल
सड़क किनारे खड़े
खम्भे की आड़ में
कबाड़ बीनती खोजी
नजरों ने भी चारों ओर देखा
और उठा ली बोतल
इत्मीनान से
जैसे मिल गया हो
उसे उसका अभीष्ट
किसी का त्याज्य
ग्राह्य बन गया किसी का
पर सुकून दोनों को था ।

आदतें बन ही जाती हैं...

– डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद,
पटना, बिहार

किसी का मुसकराना, किसी का उस पर मर जाना
अजीब हैं ये रवायतें, आदतें भी अजीब होती हैं
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं ।

आदतें ऐसी जैसे सौंधी सुगंध साँसों में बस जाती
बीते समय की रेख नजरों में उभर–सी आती
न होके भी पास मेरे, रगों में लहू बन दौड़–सी आती
मानस पक्षी के उड़ने की, अजब तरकीब होती है
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं ।

कौन आता बार–बार, स्वप्न में मुझको जगाने
बाँधकर बंकिम नयन से, धार वारुणी के बहाने
यदि मैं तनु स्पर्श के है मुझे युग–युग बिताने
चेहरे का लम्स भी, उनके रूह की रकीब होती है
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं ।

வாணி விகாஸ் தேர்வு

ஏப்ரல்-2025 முதல் தேர்வு கட்டண விபரம்

தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்	தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

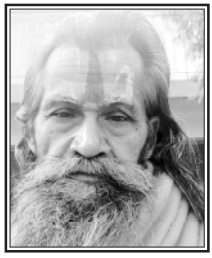

प्रयागराज महिमा

– श्री. बाबा कल्पनेश,
ऋषिकेश, उत्तराखंड

जय–जय माँ सुरसरिता पावन ।
कल्पनेश पग–वंदन वामन ।।
जय–जय–जय माँ कलुष नसावन ।
जय जगजीवन उर हर्षावन ।।

सूर्य–सुता जय–जय कालिंदी ।
दे माँ कृपा कोर की विंदी ।।
यम बंधन कालिंदी काटें ।
मनुज–मनुज को खुशियाँ बाँटें ।।

विष्णु चरण की गंग निसेनी ।
अतिशय पावन घाट त्रिवेणी ।।
बारह माधव जहाँ विराजे ।
ईश–यज्ञ का डंका बाजे ।।

कुंभ पर्व का योग बना है ।
धर्म–ध्वजा आकाश तना है ।।
उमड़ा जहाँ विश्व का मानव ।
कभी प्रवेश न पाते दानव ।।
नागवासुकी रक्षा करते ।
ईश भावना सब में भरते ।।
सिद्ध–भूमि पर सब जन आते ।
मनवांछित जीवन फल पाते ।।

भरद्वाज नित तप रत रहते ।
राम कथा गुण कीर्तन करते ।।
याज्ञवल्क्य–ऋषिगण सब आते ।
माधव की महिमा नित गाते ।।
संगम में अवगाहन करना ।
भव सागर से निश्चय तरना ।।
कल्पवास का नित व्रत चलता ।
पुष्पित मानव जीवन फलता ।।

बिना बुलाए जन आ जाते ।
माधव–गंगा का यश गाते ।।
माघ मकर रवि जब–जब आए ।
कुंभ सुधा रस मधु छलकाए ।।
यह अतिशय है घाट मनोहर ।
हुआ विधाता यज्ञ धरोहर ।।
सरस्वती की महिमा न्यारी ।
विधि ने सफल सृष्टि विस्तारी ।।

मंजिल चाहे कितना भी दूर हो मन में नूर हो
तो पाना आसान है
मन में सिर्फ शंका भरा रहे तो पाना नहीं
खोना ही पड़ता है ।

धूप

– श्री. अवनीश कुमार गुप्ता 'निर्द्वंद', प्रयागराज, उ.प्र.

सर्दियों में धूप का राज,
हर गली में उसका ही बाज ।
घर के आँगन में जो उतर आई,
लगता जैसे सरकार बनकर आई ।

गुनगुनी धूप का खेल निराला,
कभी सीधे छत पर, कभी आँगन में पग डाला ।
जहाँ तिरपाल देखा वहीं लेट गई,
फूस की छत पर तो जैसे फिक्स बैठ गई ।

चाय की दुकान पर चर्चा थी भारी,
''धूप सस्ती होनी चाहिए हमारी !''
किसी ने कहा, ''राशन में बँटना चाहिए,''
तो पंडित जी बोले, ''यज्ञ से धूप बढ़ाई जाएगी ।''

गली के कुत्ते भी छतों पर चढ़ गए,
मौसम विभाग के भरोसे लड़ गए ।
''आज धूप रहेगी'', जब हुई ये घोषणा,
तो सभी रजाइयाँ बोलीं, ''अब तो होना है धोखा ।''

मोहल्ले की छतों पर लग गए मेले,
धूप के बहाने, सजे ढेरों ठेले ।
कहीं मूँगफली, कहीं गजक का ठिकाना,
धूप में बैठा हर आदमी बना राजा सयाना ।

पर सर्दी कहती, ''ये धूप तो मेरी दुश्मन है,
मेरा आस्तीन का साँप, जो खुद 'हिटमैन' है ।''
लेकिन धूप बेफिक्र, बेपरवाह,
हवा को चिढ़ाकर कहे, ''मैं हूँ यहाँ शहंशाह ।''

गुनगुनी धूप, तेरी यही कहानी,
सर्दियों में सबकी बन जाती तू रानी ।
पर गर्मी में जब आती है तेरी जवानी,
तब सब कहते हैं, ''भागो रे, आग बरसानी !''

एक बार एक बार ही सही सोच लो
फिर करो काम जो कुछ भी करना है
काम शुरू करके फिर बताओ क्या सोचना है ?

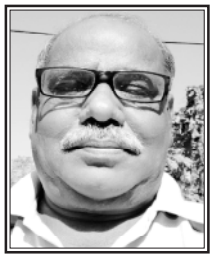

कविताएँ

– श्री. मोतीलाल दास, मनोहरपुर, झारखंड

शब्द

मेरे शब्द
मेरी बातें नहीं मानते
जितना ही मैं उसे सजाता
उतना ही वह विदक जाता
अब मुश्किल है
शब्दों के बिना
कैसे अर्थों को बुनूँ
और कैसे लिखूँ
कोई जीवंत कहानी
मैंने शब्द से कहा
कुछ तो रहम कर
अर्थो के भाव भर
उसने कहा
जब किसी चूल्हे में
भात नहीं चढ़ता
तब तो तुम
इस कहानी को
क्यों नहीं देते सारे अर्थ
तुम्हारी कहानी में तो
सिर्फ पांच सितारा संस्कृति की
चटपटे मसाले होते हैं
मैं क्या कहता उसे
कि आजकल यही कहानी बिकती है
भूख की कहानी को
कहाँ कोई खरीददार मिलता है ।

फूल

हे ईश्वर
हो सके तो मुझे
मत बनाना इंसान

आजकल
इस धरती पर
इंसान बदल गए हैं
शैतानों के शक्ल में

अगर बनाना ही है मुझे
तो एक फूल बना देना
और भेज देना
उस शैतान के बगीचे में
शायद किसी दिन
उसकी नजर मुझ पर पड़े
और मुझे तोड़ने की बजाए
हौले से मुझे सहलाए

बस उसी पल
समझ लेना
बदल रहा है शैतान
इंसान के शक्ल में ।

अब कहाँ ?

– श्री. मोहित.जे.
संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

मुकाबले हैं यहाँ
मुसीबतें भी
आलोचनाएँ हैं कई कई
चुनौतियाँ भी है नई नई ।

उदास मत बनो
उदाहरण बनकर जियो
आलसी कभी न बनो
अति उत्तम बनकर जियो ।

जिन्दगी है एक बगीचा
भरे फूलों की खूबसूरती
कभी कांटों का दर्द भी
सह लो तुम साहसी बनो ।

मेहनत के साथ लक्ष्य चाहिए
सफलता देती है तुझे तब यश
तेरे सारे सपने होंगे पूरे
मिट जायेगा गम रूपी अंधेरा ।

मन मोहन मन में बसाइए श्री कृष्ण की आराधना जीवन भर आप कीजिए ।

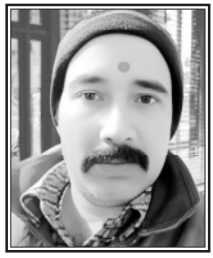

पूर्णिका (आँखें)

– पं. अंशुल विश्वंभर मिश्र 'कदम', जबलपुर, म.प्र.

राज दिल के यूँ, खोलती आँखें ।।
तुम मेरे हो बता, रही आँखें ।।

सामना कर न पाए, हम तेरा ।
प्यार दिल में छुपा गई आँखें ।।

अलकें पलकें नज़र झुकाई जब ।
कह रही यार रत, जगी आँखें ।।

कह गये सर कलाम, अपने यूँ ।
सपने देखो न सब, खुली आँखें ।।

फैसला सबको क्या, पता चलता ।
क्यूँ तुम्हारी डरी, डरी आँखें ।।

हम भी पहचान लेते, हैं सब कुछ ।
ग़म जदा हैं कभी, ख़ुशी आँखें ।।

रात तनहा गुजर, रही है क्या ।
कह गई बात सब, तेरी आँखें ।।

आशिकी का बहुत, भरोसा था ।
आप को अपना कह, थमी आँखें ।।

क्या भरोसा करें, गज़ब दुनिया ।
हर 'कदम' पे हैं हर, गली आँखें ।।

नये युग में...

– श्री. व्यग्र पाण्डे,
गंगापुर, राजस्थान

चौके से महिला अब निकलने लगी है
सदियों की छवि को बदलने लगी है
चलती थी बैसाखियों पर जो पहले
लगता अब पैरों पर वो चलने लगी है

घर की दीवारें कारागार थी जिसकी
ड्योडि सदा से पहरेदार थी जिसकी
पलटने लगी है वो स्वयं अपने पन्ने
नये युग में तब से समझने लगी है

उसकी नियति था काम केवल घर का
उसकी नियति था नाम केवल घर का
पुरुष से अब कंधे से कंधा मिलाकर
अपनों के संग खुद भी संभलने लगी है

परदे की परिधि से वो बाहर आई
नौकरी भी करती और करती कमाई
पुरानी रिवाजों को दरकिनार करके
दशा-दिशा स्वयं की पलटने लगी है

मंचों पर भाषण अतिथि बन बिराजे
अधिकारों के लिए जो यहाँ वहाँ गाजे
संकेत हैं अच्छे देश समाज को हमारे
ये देख 'व्यग्र' लेखनी लिखने लगी है ।

जीवन

– श्री. संगीता ठाकुर,
काठमांडू नेपाल

जहाँ जीवन है
वही प्रतिस्पर्धा है
और जहाँ प्रतिस्पर्धा है
वही जीवन है
इसी दो पहलू के दोड में
हम निरंतर दौड़ते रहते हैं
कभी जीवन में प्रतिस्पर्धी बन जीतते है
तो कभी हार जाते हैं
हर पल, हर क्षण हमारे साथ
यही घटता रहता है
हम मानव होने के साथ-साथ
एक उत्कृष्ट स्पर्धी भी है
जिस कारण जीवन में
जीत और हार सुनिश्चित है
पर हम सदा जीत पर ही विश्वास करते हैं
और हार को सदा नकारते हैं
पर जीवन के दो पहलू को
कभी नकारा नहीं जा सकता
जहाँ जीत है वहीं हार
जहाँ खोना है वहीं पाना
जहाँ हानी है वहीं लाभ
जहाँ गम है वहीं मुस्कान
यही सत्य है
और
सत्य सदा हमारे साथ है
इसलिए जीवन के हर मोड़ पर
मुस्काना ही
हमारा काम है ।।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் www.shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகம் மற்றும் தேர்வுக் கட்டண விபரம் :

தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்	தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

தேர்வுக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

தேர்வு கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்) 10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

रुद्र पशुपति नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

जहाँ पवित्र भक्ति को स्थान प्राप्त है मान लो
वहाँ उन्नति को भी अत्युत्तम स्थान है जान लो
चोल राज्य के राजा सारे भक्ति की शक्ति जानते
चोल राज्य भर मंदिर अनेकानेक बनाकर नमाते
राज्य को भक्ति का केंद्र बनाकर वे राज्य करते
राजा ही नहीं साधारण प्रजा भी वहाँ का करते
शिव को अपना ईश्वर मानकर महेश्वर को नमाते
शिव शिव हर हर कह कह जीवन अपना वे बिताते ।

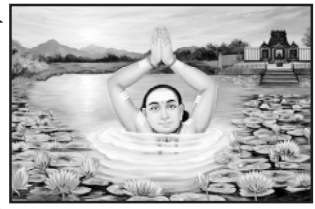

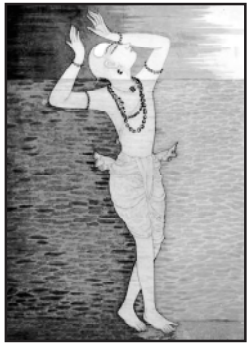

भक्ति सकारात्मक है नहीं नकारात्मक को स्थान है
भक्त मन में शक्ति भरना भक्ति का कार्य महान है
भक्त मन में भक्ति के सिवा दुर्गुण का स्थान नहीं है
भक्ति की विशेषता पावन गुणों को भरना वही है
जिस देश में भक्ति का प्रवाह है मान लो सच यह
उस देश मे प्रकृति बहुत ही मनोहर ठहर जाती है
हर रूप से हरियाली भरकर संपन्न वह बनाती है
प्रजा को सुखी बनाने में प्रकृति खुश हो जाती है ।

चोल राज्य का तिरुत्तलैयूर गाँव बडा मान्य है
चारों ओर से हरा भरा अन्न का वह भंडार है
ज्ञानी मानवों का महान स्थान वह पाया गया
उसी कारण उस प्रदेश में न्याय और धर्म ठहरे
जहाँ सज्जन ठहरा करते हैं मानो वही स्वर्ग है
सद्गुणों से भरा रहना वही असली वेदपुरी है
जो खुद के लिए नहीं सब के लिए जिया करते हैं
वही सुख का असली अनुभव कर भी पाते हैं ।

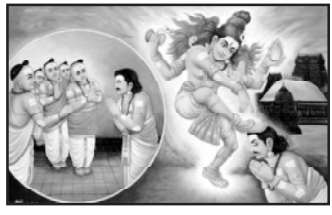

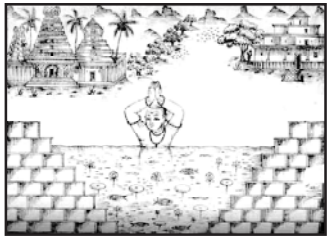

पशुपति नाम था उनका धर्माचरण काम ठहरा
जन्म से ब्राह्मण ठहरे वेद पारायण काम ठहरा
वेद का पठन पाठन कर महान भक्त ये ठहरे
चारों वेदों का अध्ययन कर महान भक्त ठहरे
शिव के प्रति इनकी भक्ति बढने लगी सतत
शिव नाम की महिमा जानकर जापते थे सतत
शिवस्तुति शिव परायण शिव स्मरण शिव शिव
शिव ही जगत शिव ही रात-दिन और सब था ।

मंदिर जाते मन भर शिव को स्थान देकर जपते
पुष्पों से शिव की आराधना सुबह शाम ये करते
भक्तों के मन में शिव के प्रति भक्ति भाव भरते
सबके साथ मिलकर भी शिव महान की पूजा करते
समय समय पर हर मन में शिव भक्ति ये भरते
साधु का जीवन जीकर अपने आपका भक्त बताते
शिव शिव हर हर महादेव मानकर चलते भक्त नित
शिव ही महेश्वर शिव ही परमेश्वर कहकर चित्त भरते ।

सुबह शाम इनका एक ही बना रहता था तब काम
मंदिर के तालाब में नहाकर तन मन पवित्र बनाकर
उतर जाते तालाब में गले तक अपने आपको डुबाते
कर हाथ दोनों आसमान की ओर उन्हें मिला नमाकर
पाठ करते रुद्र मंत्र का सुबह शाम अति तल्लीन होकर
रुद्र मंत्र जपते जपते भगवान को बहुत पास ले आये
रुद्र मंत्र की कृपा से भगवान शिव के मन में स्थान पाये
आये महेश्वर अपने भक्त ले गये रुद्र पशुपति नाम दिये ।

पशुपति बन गये रुद्र, भजन कर रुद्र सतत ।
पावन भक्त ठहर गये, रुद्र नायनार नित ।।

कहाँ चले जा रहे

– श्री. गोपेंद्र कु
सिंहा गौतम,
औरंगाबाद, बिहार

कुछ आगे, कुछ पीछे
लोग दौड़े जा रहे हैं;
पर क्या पता है उनको
कहाँ चले जा रहे हैं ?

*****

झूम रहे हैं, गा रहे हैं,
गला फाड़कर चिल्ला रहे हैं;
खुशी मना रहे हैं या
किसी को डरा रहे हैं ।

*****

तन-बदन की सुध नहीं
देखो क्या नारा लगा रहे हैं !
चिढ़ा रहे हैं किसी को या
असली चेहरा दिखा रहे हैं !

*****

नया-नया उम्र है
और चढ़ती जवानी;
बहकावे में बह रहे हैं
जैसे सोन-पुनपुन के पानी !

*****

ना घर-द्वार का फिक्र है,
ना भविष्य की कोई चिंता;
दूसरे के कहे पर उड़े जा रहे हैं
मानो उड़ रहा हो अवारा परिंदा !

*****

बीत जाएगी जवानी,
फिर घेरने लगेगी बुढ़ापा;
बहकने वाले सब लूट खाएँगे
हाथ में बचेगा सिर्फ़ झंडा-पताका !

*****

खुद तो मिटेंगे, पर काली
होगी नई पीढ़ी की कहानी;
दुनिया उन्हें कोसेगी,
जिसने बर्बाद की शावकों की जवानी !

*****

कुछ आगे, कुछ पीछे
लोग दौड़े जा रहे हैं;
पर क्या पता है उनको
कहाँ चले जा रहे हैं ?

वक्त भला या बुरा हो दोस्त अच्छा होना चाहिए । दूरी कितनी भी क्यों न हो प्रेम में ताकत जरूर होना चाहिए ।

गर्व

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

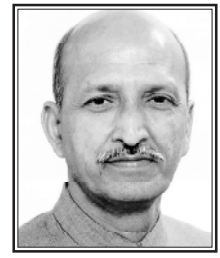

भारत में रह रहे हो तो, हिन्दी में बोलिये,
बोलने से पहले अपने, शब्दों को तोलिये ।
विनम्र शब्द हिन्दी में, शालीनता लिए हुए,
विभिन्न भाव लिए शब्द, सब राज खोलिये ।

सीखिये भाषाएँ सभी, बोलियाँ भी सीखिये,
ज्ञान के भन्डार प्रचुर, सब कहीं से सीखिये ।
भाषाएँ बोलियाँ हमारी, संस्कृति समृद्ध करें,
विश्व फलक पर बात हो तो, हिन्दी में बोलिये ।

आँख को तरेरिए या आँख झुकाइये,
नाराज़गी हो कहीं, आँख दिखाइये ।
पैरों में गिर माफ़ी, चरण छूने की चाह,
कदमों के निशान, बस हिन्दी में बनाइये ।

हिन्दी है विलक्षण, यह सरल भी बहुत है,
शब्द सम्पदा हिन्दी की, विशाल बहुत है ।
तेलगू कन्नड़ कोंकन, आपत्ति ज़रा नहीं,
हिन्दी राष्ट्रभाषा–विश्वभाषा, गर्व बहुत है ।

प्यारी शान है हिन्दी

– कैप्टन डॉ. जय महलवाल (अनजान),
बिलासपुर, हि.प्र.

हमारे माथे की जो है बिंदी,
वो प्यारी शान है हिन्दी,
जिससे है हमारा अस्तित्व,
वो गौरव और पहचान है हिन्दी ।
हमारे दिल का सुकून है हिन्दी,
हमारे दिल का जुनून है हिन्दी,
हर दिल पर जो राज है करती,
वो विश्व की शान है हिन्दी ।
विश्व हिन्दी दिवस है खास,
हिन्दी को रखना है हर दिल के पास,
सबको एकजुट रखती है हिन्दी,
हमारे दिलों की शान है हिन्दी ।

सीताराम

– श्री. राज किशोर वाजपेयी 'अभय', ग्वालियर, म.प्र.

सीताराम जपो मन निश–दिन,
हर युग में सुख दाई ।
सीताराम जपें हनुमंता,
सकल सिद्धियां पाई ।
भोले–शंकर भी जपते हैं,
ऐसी हैं प्रभुताई ।
सीताराम जपो मन निश–दिन,
हर युग में सुख दाई ।।

सीताराम प्रकृति पुरुष हैं,
तत्व सृष्टि का जानो ।
असुर–विनाशक सद्गुण शासक,
सदा ब्रह्म ही मानो ।
सीताराम जपो मन निश–दिन,
हर युग में सुख दाई ।।

राम–राज्य के हैं निर्माता,
संग सीताजी राम ।
शील, शौर्य मर्यादा–रक्षा,
राम के पावन काम ।
सीताराम जपो मन निश–दिन,
हर युग में सुख दाई ।।

ऋषि–मुनियों का यही मंत्र है,
जो है मुक्ति दिलाता ।
असुर–भाव का तिमिर मिटा कर,
देव–भाव सरसाता ।
सीताराम जपो मन निश–दिन,
हर युग में सुख दाई ।।

सीताराम युगों से पूजित,
कष्ट हरैं जन–जन के ।
तीन–लोक के सुर, नर, मुनि–जन,
ध्वानत अपने मन के ।
सीताराम जपो मन निश–दिन,
हर युग में सुख दाई ।।

वक्त

– श्री. गजानन पाण्डेय, हैदराबाद, तेलंगाना

वक्त हाथों में,
रेत–सा फिसल जाता है
एक नया दृश्य,
हमें चकित कर जाता है
देर कर दी तो,
पछतावा ही हाथ लगता है ।
हम जान लें, वक्त की कीमत
वरना यादों के साथ,
आदमी अकेला रह जाता है ।

मेहनत

– डॉ. अशोक,
पटना, बिहार

हार कैसे मान लूँ ।
पापा के इंतजार की,
ख़बरें अहसास दिलाने में अहम
भूमिका निभाने का,
सबसे खूबसूरत इल्म है ।
इसकी वजह से ही,
जीत के इंतजार की कोशिश कर रहे हैं,
यह नहीं एक भ्रम है ।

पापा की उम्मीदों पर खरा,
उतरने की कोशिश कर रहा हूँ ।
समझौते को लेकर,
अपनी हिफाजत ख़ुद ही ख़ुद से,
लगातार कर रहा हूँ ।

हमें उम्मीद है कि मेरे पापा,
मुझे मनमानी करने से रोकेंगे यहाँ ।
नजदिकियाँ बढ़ाने में,
भरपूर मदद करने की,
लगातार मेहनत करते हुए रहेंगे यहाँ ।
माँ–बाप का उम्मीद हूँ,
नज़रों से देखते हुए आगे बढ़ने में,
लगा हुआ हूँ मैं ।
इस सियासत पर,
अमल करने की कोशिश कर रहा हूँ मैं ।

दादा–दादी, नाना–नानी के दिलों में,
एक अरमान जगी हुई है ।
इसकी वजह से ही,
आशीर्वाद देने की बड़ी लकीर खिंचने
की,
कोशिशें की जा रही है ।

मेहनत जोश ही मुझे,
इस सियासत में ताकत दिलाएँगी यहाँ ।
रिश्तेदारों, मोहल्लेवालों और दोस्तों
से मिलनेवाले ताने की ऊँची
तकलीफें झेलने में,
मददगार साबित होने की,
मजबूत आवाज देंगी यहाँ ।

इन्हीं उलझनों से रूबरू होना,
आज़ मेरी जिंदगी की आगाज़ है ।
हमें आनन्द और प्रसन्नता मिले,
यही दे रही आवाज है ।

हिन्दी भाषा की पहचान ये देश की शान है ।

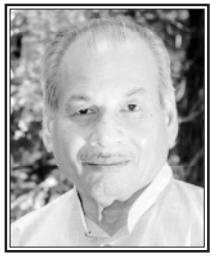

स्वयं के व्यक्तित्व पर नाज़ करना है

–श्री. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

आँखें खुलते ब्रह्ममुहूर्त में सुबह सुबह
निरंकार परमात्मा के दर्शन हो जायें,
दिन भर के लिये आभार अदा करके,
सबके भले की शुभकामना की जाये ।

सबका दिन ख़ुशी भरा मंगलमय हो,
मेरी विनती है हे प्रभु ! मेरे जीवन में सेवा,
सतसंग, अनंत भक्ति, दया हो,
इस सेवक के जीवन का यह ध्येय हो ।

मेरी सोच मेरे विचार खुद को और
दूसरों को प्रोत्साहित करने वाले हों,
मेरी कल्पना मेरी कृतियाँ बन जीवन
व समाज को भी गौरव देनेवाली हों ।

सुख शान्ति से सारा जीवन रहने का
राज बता दूँ, कम खाना, ग़म खाना,
चरैवेति चलते रहना, पल पल बस
हँसते रहना, सबको प्यार देते रहना ।

कोई कहाँ समझ पाएगा मैं क्या हूँ
केवल मैं जानता हूँ मेरे मन में क्या है,
हालाँकि लोग कोशिश ज़रूर करेंगे,
बातें करेंगे व अन्दाजा भी लगाएँगे ।

उँगली भी उठायेंगे, निंदा भी करेंगे,
रुकना नहीं है पथ पर जाना ही है,
अपने हृदय का खुद ख़याल रखकर
स्वयं के व्यक्तित्व पर नाज़ करना है।

आदित्य किसी की सोच व मंतव्य
उसका अपना है उससे नहीं डिगना है,
किसी की सोच से, क्या फ़र्क़ होगा,
अपनी सुख शान्ति क्यों भंग करना है ।

तकदीर में जो कुछ है सिर्फ उसी को मानव
अपना पाता है
तकदीर में जो बिलकुल नहीं है
वह उसके पास तक नहीं आ पाता है।

पुनर्मिलन

– श्री. नरेश कुमार गुप्ता 'खैरी',
मंगलौर, कर्नाटक

पुनर्मिलन की बेला होगी,
अपना मधुर मिलन होगा,
दो नैनों से नैन मिलेंगे,
श्रेयष आलिंगन होगा ।

सिहरन पुलकन बन जाएँगे,
जब साँसों से साँस मिलें,
विरह वेदना थम जाएगी,
जब सजनी मैं-आप मिलें ।

प्रेम के बादल घुमड़-घुमड़,
झर-झर लड़ियाँ बरसाएँगे,
स्वागत में अपने पर खोले,
कलापी नृत्य दिखाएँगे ।

तारे नभ में लाज से भरकर,
आँख-मिचौली खेलेंगे,
बाहुपाश में लेकर तुमको,
उलझी लट हम खोलेंगे ।

पलकें झुक जाएँगी तुम्हारी,
रोम-रोम पुलकित होगा,
वाणी द्वार न पट खोलेंगे,
मन अपना प्रमुदित होगा ।

स्नेहसिक्त छुअन से तेरे,
दिल की धड़कन बढ़ जाएगी,
प्रिय से मिलने एक विरहणी,
जब दौड़ी आ जाएगी ।

पौत्र

– श्री. के. अनुराधा,
मंगलूरु, कर्नाटक

दादा-दादी के वात्सल्य की फुलझड़ी ।
वंश वृक्ष आगे बढ़ाने की है नित कड़ी ।
अकलंक प्यार की निशानी बन पड़ी ।
है ये बुढ़ापे की ममता की स्वर्णिम छड़ी ।

दो पीढ़ियों का सच्चे भाव वाहक ।
हर घर का है यह आनंद का दीपक ।
पितामह के संस्कार का सम्यक द्योतक ।
बढ़ाता है घर-परिवार में सदा रौनक ।

बुढ़ापे का है यह सबल, सुदृढ़ सहारा ।
दादा-दादी का नित आत्मिक दुलारा ।
वंशावली की स्निग्ध ज्योति है ये प्यारा ।
बिन पोता परिवार का है न कोई किनारा ।

है ये दादा-दादी के समग्र कहानी कोष ।
अपनी लीला से करता है सब को मदहोश ।
मासूमियत का है यह सदा अमित भंडार ।
पोता ही बुढ़ापे में जीवन का नित आधार ।

जीवन संघर्ष

– श्री. मीनाक्षी सुकुमारन, नोएडा, उ.प्र.

सफर ज़िन्दगी का अब आसान हो जाएगा
रास्ता तो मिल गया है
गम को भुलाकर खुशियों को गले लगाने का
आँसुओं को मुस्कुराहट से सजाने का
तन्हाई की पीर हटाकर
खुद से खुद के मिलने का
क्यों बेबस हो बस खुद को
कोसा करें रो छुप छुप कर
वक्त अच्छा नहीं रहा तो बुरा भी नहीं रहेगा
कर ले बस यकीन खुद पर
सफर ज़िन्दगी का अब आसान हो जाएगा
रास्ता तो मिल गया है
रेगिस्तान को गुलज़ार बनाने का
घने कोहरे को हटा तपते सूरज
को उदय करने का
हर दर्द को मिटा खुश रहने का
जीवन संघर्ष को सरल बनाने का
सफर ज़िन्दगी का अब आसान हो जाएगा
रास्ता तो मिल गया
हर बाधा के रूख को मोड़
खुलकर पंख फैला उड़ान भरने का ।।

बहुत दूर जाना है

– डॉ. अलका अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

अभी, बहुत दूर जाना है ।
माना बहुत देर से चलते,
इतनी दूर निकल आई हूँ ।
पर मंजिल का पता नहीं कुछ,
अब भी कहाँ नज़र आई है ।
अभी, बहुत दूर जाना है ।
वैसे भी जब तक जीवन है,
तब तक मुझको चलना ही है ।
पथ की बाधाओं का क्या,
मुझको तो आगे बढ़ना ही है ।
अभी, बहुत दूर जाना है ।
जो भी राही है,चलता है,
थकता, गिरता है, उठता है ।
बाधाओं के आने से क्या
उसे कभी भी भय लगता है ?
अभी, बहुत दूर जाना है ।
चरैवेति के मूल मंत्र को,
कैसे भुला दिया था बतला ।
रुकने का अब नाम ना लेना,
चलना है, चलते जाना है ।
अभी, बहुत दूर जाना है ।

चिंतन भोले का

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी 'राम', इन्दौर, म.प्र.

कर लें चिंतन हम भोले का,
भोले पार लगाएँगे,
जीवन की फाका-मस्ती में,
भोले की धुन गाएँगे ।
कर लें चिंतन...
भटक रहे अपने लक्ष्यों से,
अहम की चारदिवारी में,
प्रेम, भक्ति की सुध ले लें,
जुड़ जाएँगे भोले से ।
कर लें चिंतन...
नयन झुकाकर जब देखेंगे,
अपने कर्मों की क्यारी,
या छलकेंगे आँसू तेरे,
या भोले को पाएँगे ।
कर लें चिंतन...
इसीलिए कहते जीवन में,
राग-द्वेष से दूर रहो,
भोले से सब लेते हो तो,
देने से मत दूर रहो ।
कर लें चिंतन...
आओ सारे जन मिलकर अब,
प्रेम की अलख जला लें हम,
है भोले की भोली सूरत,
बस उसकी धुली लगालें हम ।
कर लें चिंतन...

गीत

राम मेरे आयेंगे

– श्री. भूपसिंह 'भारती', महेन्द्रगढ़, हरियाणा

राम ही राम सुहाये,
कुटी में रामजी आएँ,
यह शबरी आस लगाएँ,
राम मेरे आयेंगे, दर्श दिखाएँगे ।
राम की शबरी सगी है,
राम की प्यास लगी है,
दर्श की आस जगी है,
राम मेरे आयेंगे, दर्श दिखाएँगे ।
कुटी को बुहारे शबरी,
पंथ को निहारे शबरी,
राम को पुकारे शबरी,
राम मेरे आयेंगे, दर्श दिखाएँगे ।
प्यार में खपरी शबरी,
नाम ये रटरी शबरी,
हुई बेसबरी शबरी,
राम मेरे आयेंगे, दर्श दिखाएँगे ।
राम कुटिया में आये,
शबरी फूली ना समाये,
बेर जब झूठे खाये,
खुशी से 'भारती' गाये,
राम मेरे आयेंगे, दर्श दिखाएँगे ।

अन्तर्ज्वाला

–श्री. राजेश पाठक,
गिरिडीह, झारखंड

जीवन में हो तभी उजाला
धधकेगी जब अन्तर्ज्वाला !
उसका क्या जो दंतहीन है
उसका क्या जो मतक्षीण है
कहने को ही जो प्रवीण है
निगले अक्सर छीन निवाला !
जीवन में हो तभी उजाला
धधकेगी जब अन्तर्ज्वाला !
एक जरूरत रखा तीन है
पद दूजे पर आसीन है
इधर–उधर ही तल्लीन है
कैसे कह दूँ है रखवाला !
जीवन में हो तभी उजाला
धधकेगी जब अन्तर्ज्वाला !
ममता तो है नहीं जीव पर
रहे पैर न कभी नींव पर
अंकुश भी है नहीं जीभ पर
हाथ रखे मदिरे का प्याला !
जीवन में हो तभी उजाला
धधकेगी जब अन्तर्ज्वाला !
सजा से पहले रजा पूछते
घड़ी में कितना बजा पूछते
नहीं जुर्म की वजह पूछते
नियमों का बस दिए हवाला !
जीवन में हो तभी उजाला
धधकेगी जब अन्तर्ज्वाला !
देख रहे जो दिवास्वप्न हैं
करते भी ना जो प्रयत्न हैं
रखे अनुत्तरित सभी प्रश्न हैं
मालिक है तब ऊपरवाला !
जीवन में हो तभी उजाला
धधकेगी जब अन्तर्ज्वाला !

माता संतोषी वंदन मनहरण घनाक्षरी

– श्री. संजय शर्मा, आगरा, उ.प्र.

संतोषी माता का व्रत,
करता है जो भी भक्त,
उसको यह चकाचौंध,
मोह नहीं पाती है ।
लालच न आता मन,
सुखी होता है जीवन,
लालसा कोई लुभाती,
मन में न आती है ।
सुख से है सदा जीता,
प्रेम सुधा रहे पीता,
सपनों की दुनिया न,
उसको सुहाती है ।
देतीं उसे जो भी माता,
उतना ही उसे भाता,
और कोई दौलत भी,
उसको न भाती है ।

तुम पर है

– श्री. केशव शरण, वाराणसी, उ.प्र.

हाथ–पैर
दे दिए गए हैं
बनाओ–बिगाड़ो की बुद्धि
दे दी गई है
और सन्तान पैदा करने की शक्ति
दे दी गई है
अब तुम कैसे बनते हो व्यक्ति
तुम पर है
अपना बनाओ
दुनिया का बिगाड़ो
यह काम
आम है
अपना बिगाड़ो
दुनिया का बनाओ
यह बहुत कम होता है
अपना बिगाड़ो
दुनिया का भी बिगाड़ो
यह भी आम है
अपना बनाओ
दुनिया का भी बनाओ
यह भी कम होता है
मतलब कम व्यक्ति करते हैं
निर्माण और ध्वंस में अंतर
रात और दिन का है
करने का मामला
सरल और कठिन का है
पर कुछ कठिन किए बिन
सरल क्या होगा जीवन ?
सरल केवल
सन्तानोत्पत्ति रहेगी
स्वार्थ और हिंसा

लक्ष्य पर तेरा निशाना हो

– श्री. अशोक पटेल 'आशु', शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

लक्ष्य पर तेरा निशाना हो
मंजिल ही तेरा किनारा हो
मन क्यों दौड़ाते हो बेवजह
लक्ष्य में तेरा ध्यान सारा हो ।
अर्जुन–सा, तुझमें दृढता हो
ध्यान में तेरी, एकाग्रता हो
लक्ष्य तू ही, भेद सकता है
तेरे विश्वास में, महानता हो ।
एकलव्य जैसा अभ्यास हो
सफलता का यह आभास हो
दृढ लगन तुझमें यह खास हो
मन में अटूट तेरा विश्वास हो ।
तू अटल है शेर–सा निडर है
तुझमें ही छिपा, सिकंदर है
तुझमें वह अडिग, साहस हैं
तेरे हाथों ही तेरा, मुक़द्दर है ।

नारी तो नारी

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

लो कर दिए न आप सबसे बड़ा बकवास,
आराम से कह दिए औरत होती है बदमाश,
तो क्या आपके माँ की ये बदमाशी थी कि
आप इस दुनिया में आए,
प्यारा दुलारा बेटा कहलाए,
क्या ये आपके बहन की बदमाशी थी कि
वह आपको अपना हमदर्द भाई बताती है,
आपके लिए दुआओं की दरिया बहाती है,
ये बदमाशी तो नहीं कि आपकी पत्नी
बन गई थी आपके बच्चों की माँ,
बना गयी थी एक नया जहाँ,
इतनी घटिया परवरिश तो नहीं होगी आपकी,
कहाँ से लगा लिए लेबल घटिया छाप की,
पुरुष होने की थेथरई
आपके अंदर बह रही है,
तभी आपकी जुबान
औरत को बदमाश कह रही है,
कुछ एक के गलत कार्य से
सारी औरतें बदमाश नहीं हो जाती,
ऐसा कहते हुए आपकी
छाती क्यों नहीं फट जाती,
दुर्गावती, झलकारी, सावित्रीबाई,
इंदिरा, कल्पना चावला भी थी नारी,
कहाँ से आयी तुझमें मानसिक बीमारी ।

भारत हमारा है ।
प्राणों से भी प्यारा है ।

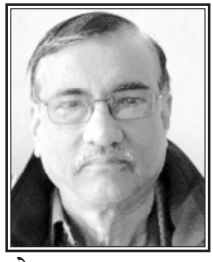

बाल कविता

पतले काका

– डॉ. अखिलेश शर्मा, इन्दौर, म.प्र.

ढोल–ढमाका, धूम–धड़ाका,
सींक सरीखे पम्मू काका ।
हवा चले तो हिल–हिल जाते,
तेज आवाज से घबरा जाते ।
बारिश में बाहर न निकलें,
डर लगता है पैर न फिसले ।
जरा ठंड से कंपकंपाने लगते,
गर्मी से खिसियाने लगते ।
पतला होना हुआ मुसीबत,
मोटे होने की है चाहत ।

क्यों गीत गाना भूल गया तू ।

– श्री. प्रकाश कुमार मधुबनी
'चंदन', चेन्नै, तमिलनाडु

क्यों गीत गाना भूल गया तू ।
क्यों गुनगुनाना भूल गया तू ।
क्यों कर लिया दूरी ताल से
क्यों धुन बजाना भूल गया तू ।

भूली बिसरी वो सारी यादें ।
सावन की झमाझम बरसाते ।
वो टपकती पानी की बूंदें ।
उन बूँदों से राग बनाना भूल गया तू ।

मन्दिर की वो पुरानी चौखट ।
जिन पर फूटे कई गीतों के स्वर ।
उन गीतों से बनी तेरी शानों शौकत ।
क्यों उन चौखटों पे जाना भूल गया तू ।

बुला रही वो दख्त दरवाजे ।
बुलाएँ वो जानी पहचानी आवाजें ।
उन आवाज़ों को सुन जरा ।
क्यों उनपर तान उठाना भूल गया तू ।

कहते भवरे घूम घूम कर ।
कहे कोयल कूक कूक कर ।
उन कोयलों की आहट सुन
क्यों नकल लगाना भूल गया तू ।

जिन पर करते लोग वाह वाह ।
सागर की वो गहराई अथाह ।
उन अथाह सागर की गहराई से
क्यों मोती लाना भूल गया तू ।

सच सच बता दिमाग पे जोर लगा ।
क्या हुआ ऐसा की सब भुल गया तू ।
कभी कला का तू था उम्दा पुजारी
क्यों कला दिखाना भूल गया तू ।

हर पल साथ देती रही मुख्र बरसाती रही
रूठती जब भी तुम मनाने पर मान भी गई
रोती कलाती लड़ती लड़ाती सब कुछ तुम
करके गई
अगर छोड़कर ही जाना है तो फिर यह सब
क्यों रचाकर गई।

जल (पानी) बाल गीत

जल से जीवन,
जीवन है जल...
जी न सके हम,
जल बिन एक पल...

1. जल का बहना,
   जल से धोना...
   जल से पौधा,
   फसलें बोना...
   जल से बिजली,
   उद्योग में जल...
   जल पीते हैं,
   नहाए मल-मल...
2. जल से भोजन,
   घर-घर बनता...
   जल से ही तो,
   बर्तन धुलता...
   चमके चमचम,
   करता झिलमिल...
   जल जहाँ वहाँ,
   रहता हलचल...
3. सागर का जल,
   पहुँचा बादल...
   बादल बरसे,
   धरती आँचल...
   भरा झील में,
   झरना का जल...
   बहती नदियाँ,
   जा कर समतल...

गुरुदेव आपके अथक परिश्रम का परिणाम इस पत्रिका में देखने को मिलता है । उमाशंकर आपको सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्न रखें ।
– श्री. नवीन कुमार जोशी, राजस्थान

शबरी के मीठे बेर की तरह 'शबरी' दक्षिण भारत में हिन्दी की मिठास फैला रही है । सरल, सहज, सुगम और अनुपम हिन्दी के लिए राष्ट्रभाषा बनने का यह एक शुभ संकल्प है और शुभ संकेत है । शबरी परिवार को हार्दिक बधाइयाँ ।
– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर, म.प्र.

हिन्दी भाषी राज्यों के स्तर की ही दक्षिण की सशक्त हिन्दी पत्रिका जिसमें हिन्दी साहित्यकारों को अच्छा स्थान मिल रहा है ।
– डॉ. किशोर अग्रवाल, IPS, रायपुर, छत्तीसगढ

अंक बहुतही सुन्दर प्रस्तुत है, अच्छा लगा । दिनो दिन तमिलनाडु में हिन्दी का प्रचार प्रसार देखकर ख़ुशी होती है, इसके लिए आपके परिश्रम फलदाई हो रहे है । तमिलनाडु में हिन्दी का प्रचार करना एक मुश्किल कार्य है और आप उसे बड़ी मेहनत से निभा रहे हैं । आपके इस कार्य के लिए दिलसे सलाम । आशा करता हूँ आप स्वस्थ रहे तथा सफल रहे यही ईश्वर से प्रार्थना । भवदीय,
– श्री. मधुकर सूर्यवंशी, नासिक, महाराष्ट्र

शबरी शिक्षा समाचार का नया अंक पढकर प्रसन्नता हुई । संपादकीय वर्तमान में शिक्षा की स्थिति पर सटीक है । बधाई व शुभकामनाएँ ।
– श्री. शशांक मिश्र भारती, शाहजहांपुर, उ.प्र.

शबरी पत्रिका के निर्बाध और ससमय प्रकाशन हेतु बधाई श्रीधर जी ।
– डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव, हैदराबाद, तेलंगाना

नवांकुर

नई शुरुआत

– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

आज हम एक नई शुरुआत के बारे में बात करेंगे । जब हमारे जीवन में एक अध्याय का अंत होता है, तब जीवन में एक नए अध्याय का आरंभ होता है । इससे हम जीवन में आगे बढ़ सकते हैं । अगर हम बीते हुए कल में ही रहेंगे, तो कभी आगे नहीं बढ़ पाएँगे । एक नई शुरुआत करने के लिए बीता हुआ कल भूलना बहुत ज़रूरी है, और उस नई शुरुआत को खुशी-खुशी शुरू करना चाहिए, न कि दुख से । हमेशा उस शुरुआत को एक संकल्प के साथ शुरू करना चाहिए । वह संकल्प ऐसा होना चाहिए कि वह हमें हमारे बीते हुए कल को कभी याद न दिलाए । हमारी नई शुरुआत से हमारी जिंदगी हमेशा अच्छाई और खुशियों से भर जाती है । इसीलिए हमेशा जिंदगी में एक नई शुरुआत बहुत ज़रूरी होती है ।

नारी

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै, तमिलनाडु

कहते हैं हम महिलाएँ हैं साहसी
करता है हमारा प्रभुत्व उन्हें गुलाम
कहते हैं हम महिला को दर्द बहुत है
करते क्या हैं हम उसे दूर करने ?
कभी हम उसे अपना रूप मानते नहीं
कहो न हम अब कौन सा प्राणी है ?

कहते हैं हम महिलाएँ हैं भगवान
मगर उनके साथ सही व्यवहार नहीं करते
कहते हैं हम महिला सशक्तिकरण है महान
करते कभी नहीं हम महिलाओं का समर्थन
कहने और करने में इतना फरक क्यों है ?
बताओ हम भी कैसे प्राणी है जगत में ?

हर नारी को माँ के रूप में देखें
हर परिस्थिति में साथ उनका दें
करते रहें उन्हें हम प्रोत्साहन
कहना नहीं है साथ देते रहना है
नारी अस्मिता सम्मान का साथ दें
आओ हम सब अब मानव कहलाएँ ।

आभारी

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

भगवान बुद्ध के सिर में छोटी-छोटी गोले होते हैं । लेकिन हमको यह नहीं पता कि वह सब घोंघे की गोले है । हम सब भगवान बुद्ध को जानते हैं । उन्होंने तपस्या के लिए शाही जीवन को कुर्बान दिया । एक दिन जब बुद्ध भगवान ध्यान कर रहे थे तब उनका सिर सूरज की रोशनी के कारण बहुत गर्म हो रहा था । इसको एक से घोंघा देखकर । उनके सिर में जाकर बैठ दिया । बाद में एक एक करके 107 घोंगे जाकर उनके सिर में बैठा गए । धीरे-धीरे गरम को बिना बर्दाश्त किये उस 108 घोंघे में मर गए थे । ध्यान खत्म होने की बात, बुद्ध भगवान ने ये घोंघे की कुर्बानी को देखकर समझ के, फैसला लिया कि, ये घोंघे की गोले को उसके सिर पर वैसे ही छोड़ दिया था । वैसे हम भी हमारी जिंदगी में, जिन लोगों को कभी नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने हमारे लिए अच्छा किया है । हमें हमेशा उनके प्रति आभारी होना चाहिए ।

महिमा

– गायत्री श्रीधर,
सेलम, तमिलनाडु

कर्म ही हमारा सच्चा धर्म है । बिना कर्म के जीवन बेकार है, कर्म से ही हमारी पहचान बनती है । अच्छे कर्म करते चलो, फल तो भगवान अपने आप ही देगा । सुबह से शाम तक मेहनत करो, तभी रोटी नसीब होती है । कर्म से ही देश आगे बढ़ता है, बिना कर्म के कुछ नहीं मिलता । हर कर्म का अपना महत्व है, कर्म ही प्रधान है, यही भारत की पहचान है । कर्म करके जीवन को सार्थक बनाओ, अपनी सभ्यता और संस्कृति को बचाओ ।

नवांकुर– रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

सरलतायै लक्षणम्

एकदा कश्चित् आशुलिपिक: रेलमन्त्री लालबहदूर शास्त्री महोदयस्य कार्यालये आगत: । तत्र कश्चन वामन: सरल पुरुष: तिष्ठन्नासीत् । आशुलिपिक: तं पुरुषं शास्त्री महोदयं एव इति न ज्ञात्वा कार्यालय सेवकः इति मत्वा च ''भो सेवक, रेलमन्त्री श्री शास्त्री महोदयेन आहूतः आशुलिपिक: आगत: इति कथयतु'' इत्यवदत् ।

त्तत् विद्युत्–अभाव–समयमासीत् । तथा च व्यजनस्य उपयोगस्य स्थाने युतकरहितं स्थातुमभ्यस्त: आसीत् लाल बाहदूर शास्त्री महोदय: । स: मुखे किमपि भावं न दर्शयित्वा आशुलिपिकं प्रति शिरः प्रणम्य ''आगच्छ महोदय, अहं भवतः आगमन विषये मन्त्रीं वदामि ।'' इत्युवाच । तदा अन्तः गत्वा मुखं प्रक्षाल्य युतकं धारयित्वा आसने उपविश्य सेवकमाहूय 'आगतम् आशुलिपिकम् अन्तः आमन्त्रयन्तु' इत्युक्त्वा प्रेषितवान् ।

भव्यतया अन्तः आगतः आशुलिपिक: सञ्चिकानां मध्ये दृष्टं मुखमवालोक्य स्तब्धः अभवत् । यत् तस्य रक्तं शीताकुलमासीत् । केवलं अंतरयुतकंधारित: व्यक्तिरेव लालबहादुरशास्त्री इति विचिंत्य तस्य शरीर: प्रकंपितोभवत् । 'महोदय, क्षम्यताम् । अज्ञतया मया भवतःअनादरं कृतम्' इत्यवदत् ।

चिंता मास्तु । न भवतः दोषः यत् भवान् मां कोऽस्मि इति न परिचिनोषि । अधुना अहम् काङ्ग्रेससर्वकारस्य रेलमन्त्रीरूपेण उपस्थितः अस्मि । क्षणपूर्वं हिन्दुस्तानस्य सामान्यनागरिकं लालबहादुरं भवता दृष्टम् । अतः भवता यत् कृतं तत् सम्यक् अस्ति मया यत् उक्तं तदपि सम्यगेव ।

स्व उद्योगं नष्टम् इति भयेन कम्पमानः आसीत् आशुलिपिकः । एतत् सम्यक् अवगत्य शास्त्री महोदय: तस्मै जलपानं दत्तवान् । तदा सस्मितं ''आशुलिपिक ! इदानीं भारतगणराज्यस्य रेलमन्त्री केचन पत्राणि आदेशितुं इच्छति । लिखताम्'' इत्युक्त्वा आशुलिपिकं सहजतया कार्यं कर्तुं कृतवान् ।

தமிழமுது – தூக்கி வினை செய்

– **எம். ஸ்ரீதர்,** நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

உறங்கும் நேரத்தை தவிர குழந்தையோ அல்லது பெரியவர்களோ எந்த மனிதனானாலும் ஏதாவது ஒன்றை செய்து கொண்டே தான் இருப்போம். குழந்தையாய் இருந்து கல்வியோ அல்லது அனுபவத்தினாலோ படித்த பாடத்தை வைத்துக்கொண்டு ஒவ்வொரு மனிதனும் ஒவ்வொரு தினமும் பல பல செயல்களை புரிந்து வருகிறான். ஒவ்வொரு செயலும் அதற்கான பலனை தருகிறது. சில செயல்கள் தனக்கு மட்டுமல்ல தன் சமூகத்திற்கு மட்டுமல்ல நாட்டிற்கு மட்டுமல்ல உலகத்திற்கே பற்பல நன்மைகளை தருகிறது. ஒருசில செயல்களோ தனக்கு மட்டுமல்லாமல் உலகத்தார் அனைவருக்கும் மீளா துயரத்தை தந்துவிடுகிறது.

எந்த ஒரு செயலையும் செய்வதற்கு முன்பாக அந்த செயலினால் விளைய போகின்ற பலன்களையும் தாக்கத்தையும் நன்கு அறிந்து கொண்டுதான் நாம் அந்த செயலை செய்யவேண்டும். சிந்தித்து செயல்படாமல் சித்தம் போன போக்கில் செய்யப்படுகின்ற வேலைகள் பல நேரங்களில் பலருக்கும் துன்பத்தை தந்துவிடுகின்றன. ஒருவரின் அறியாத்தனத்தினாலோ அல்லது குறும்புத்தனத்தினாலோ செய்யப்படுகின்ற ஒரு சிறு செயலானது மிகப்பெரிய இழப்பை ஏற்படுத்திவிடுகிறது. பல நேரங்களில் நகைச்சுவைக்காக செய்யப்படுகின்ற சில காரியங்கள் பல பெரிய வலிகளை தந்துவிடுகின்றன.

எந்த ஒரு செயலையும் செய்வதற்கு முன் அந்த செயலுக்கான காரணம், அந்த செயலை எவ்வாறு செய்வது ? அதற்கு தேவையானவை என்னென்ன ? இதனால் யாருக்கு நன்மை விளையும் யார் இதனால் தீமைக்கு ஆளாவார்கள், இந்த செயலை செய்து முடிக்க வேண்டிய கட்டாயம் என்ன ? செயலை செய்யாமல் இருப்பதால் என்ன நடந்து விடப்போகிறது ? அந்தச் செயலினால் நடக்கப்போகின்ற சாதக பாதக விஷயங்கள் என்னென்ன ? பிறகு தீங்கில்லாமல் நமக்கு இன்பம் தருகின்ற செயல்தானா அது ? என்று பலவாறும் ஆராய்ந்து அறிந்ததற்குப் பிறகு நாம் செயலை தொடங்க வேண்டும். எனவேதான் ஔவையார் **தூக்கி வினை செய்** அதாவது ஒரு செயலை செய்வதற்கு முன்னதாக அதனைப் பற்றி நன்றாக ஆராய்ந்து அதனால் வரும் நன்மைகளை எண்ணிப் பார்த்து தீமையற்ற செயல்களை செய்வதற்கு நம்மை வழிநடத்துகிறார். ஔவை வழி நடப்போம். அனைவருக்கும் இன்பத்தை மட்டும் நாம் பரிசாக வழங்குவோம்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருஆக்கூர்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

வடிவிளங்கு வெண் மழுவாள் வல்லாம் போலும்
வஞ்சக் கருங்கடல்நஞ் சுண்டார் போலும்
பொடிவிளங்கு முந்நூல்சேர் மார்பர் போலும்
பூங்கங்கை தோய்ந்த சடையார் போலும்
கடிவிளங்கு கொன்றையந் தாரார் போலும்
கட்டங்க மேந்திய கையார் போலும்
அடிவிளங்கு செம்பொற் கழலார் போலும்
ஆக்கூரில் தான்தோன்றி யப்பனாரே.

- ஸ்ரீ நாவுக்கரசு ஸ்வாமிகள் அருளிய 6-ஆம் திருமுறை

தான்தோன்றி மாடம் என்றும் தற்போது வழங்கப்படும் ஆக்கூர் திருமுறைத் திருத்தலமானது காவிரியின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள தேவாரப் பாடல் பெற்ற தலங்களுள் 46-ஆவது திருத்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

அத்ரி மஹரிஷியின் வேண்டுகோளுக்கு இணங்க அவரது மகளாகத் தோன்றிய அன்னை ஸ்ரீ பார்வதி தேவியைச் சிவபெருமான் மீண்டும் மணந்து ஏற்று அருள்புரிந்த திருத்தலம் இந்த திருஆக்கூர் ஆகும்.

காசியை விட வீசம் அதிகம் :

காசீ க்ஷேத்ரத்தைக் காட்டிலும் சற்றே பெருமைகூடிய திருத்தலம் திரு ஆக்கூர் என்று கூறப்படுகின்றது. ஒருமுறை சோழமன்னன் ஒருவன் இத்தலத்து ஈசனுக்குத் திருக்கோயில் அமைக்கும் திருப்பணியை மேற்கொண்டான். ஆனால் திருக்கோயில் சுவர்கள் கட்டிய மறுநாளே சரிந்து விழுந்தன. இதனால் திருக்கோயில் திருப்பணி துவங்கி இடத்திலேயே இருந்தது.

மிகவும் மனம் வருந்திய அம்மன்னன் மஹாதேவனிடம் மனம் உருகி வேண்டினான். இதன் காரணமாக இத்தலத்து விநாயகப் பெருமான் அந்தணர் உருவில் அரசனிடம் வந்து திருக்கோயில் முன்பு உள்ள குளத்தில் மூன்றே முக்கால் நாழிகை (ஒரு நாழிகை 24 நிமிஷம்) நின்று ஈசனை வேண்டு, எல்லாம் ஜெயமாகும் என்றார்.

மன்னனோ கோயில் கட்டுமானப்பணி தொடரவும், குளத்தில் நான் நிற்கவும் என்ன சம்பந்தம் என குழம்பினான். அப்பொழுது

அந்தணர் வடிவில்வந்த விநாயகர் இந்தத் திருத்தளம் காசியைக் காட்டிலும் சற்று மேலான பெருமை வாய்ந்தது. காசியில் கங்கையில் விட்டபொருளை இக்குளத்தில் பெறலாம் என்று மன்னனின் மனக்குழப்பம் போக்கினார்.

மன்னனும் 3¾ நாழிகை குளத்தில் நின்று பிராத்தித்துப் பிறகு கோயில் கட்டம் திருப்பணியினைத் தொடர்ந்தான். அதுவும் இடையீடின்றி நிறைவடைந்து கும்பாவிஷேகம் முதலானவை சிறப்பாக நடந்தேறின.

ஆயிரமாவராக வந்த ஈசன் :

தலைசிறந்த சோழ மன்னனாகவும், நாயன்மார் வரிசையில் இடம்பெற்றுள்ள சிறந்த பக்திமான் கோட்செங்கட்சோழன் ஆவார். ஒருமுறை இவர் வயிற்றுப்புண் காரணமாக மிகவும் அவதிப்பட்டார். ஈசனே கதி என்று அவரிடம் முறையிட்டுத் தம் குறைபோக்க வேண்டினார்.

ஈசனும் அவர்கனவில் தோன்றி மூன்று வெவ்வேறு மரங்களைத் தலமரமாகக் கொண்ட சிவாலயத்தில் 1000 பேருக்கு அன்னதானம் செய்தால் வயிற்றுப்புண் ஆறும், உபாதை நீங்கும் என்றார்.

ஈசன் காட்டிய வழியில் கோட்செங்கணும் மூன்றுதல மரங்கள் உடைய திருக்கோயில்களைத் தேடி கடைசியாகத் திருஆக்கூர் வந்தார். இந்தத் தலத்தில் கொன்றை, பாக்கு, வில்வம் முதலான மூன்று மரங்கள் தலமரமாக உள்ளது கண்டு மகிழ்ந்து அங்கே அன்னச் சத்திரம் அமைத்து 1000 பேருக்கு அன்னம் வழங்க ஆவன செய்தான். நாட்கள் 48 கடந்தன. தினமும் 999 பேரே வந்தனர், உண்டனர். மன்னனின் உடல் வருத்தத்தோடு உள்ளமும் சேர்ந்து வருந்தியது.

''இறைவா ! என்ன இது சோதனை என்று பரமசிவனைப் பணிந்து துதித்தான். மறுநாள் 1000ஆவது இறையில் முதியவர் ஒருவர் அமர்ந்தார். மன்னன் மகிழ்ந்தான். 1000 பேர் நிறைவாக உண்டனர். மன்னன் வயிற்றுப்புண் மறைந்தது. ஆச்சர்யத்துடன் 1000 ஆவதாக வந்த முதியவர் அருகில் வந்த மன்னன் தங்களுக்கு எந்த ஊர் என்று கேட்டான். பதிலுக்கு முதியவர் பதிலுக்கு யாருக்கு ஊர் ? எனக் கேட்டார். இதனால் கோபம் கொண்ட அரச வீரர்கள் முதியவரிடம் அரசன் கேள்விக்குப் பதில் கூறாமல் எதிர்கேள்வி கேட்கிறாயா ? என மிரட்ட, கையில் கோலுடன் ஓடிய முதியவர் அருகில் ஒரு புற்றின் மீது விழுந்து மறைந்தார்.

வீரர்கள் வந்த புற்றினைத் தோண்ட புண்ணிய வடிவாய் ஒரு லிங்கம் கிடைத்தது.

மன்னன் பக்தியுடன் அந்த லிங்கத்தை எடுத்து வந்து ப்ரதிஷ்டை செய்து திருக்கோயில் அமைத்தான்.

குபேரன் பிறந்த ஊர் :

குபேரன் பிறந்து, வளர்ந்து, வழிபட்டு இறைவன் அருள் பெற்ற

ஊரும் இந்த ஊரே ஆகும்.

சிறப்புக்கள் :

1. இந்தத் தலத்து விநாயகர் ''பொய்யா விநாயகர்'' என்று சிறப்பிக்கப்படுகின்றார்.
2. ''யாருக்கு ஊர்'' என்பதே காலப்போக்கில் ஆக்கூர் என்று மருவியது.
3. இந்தத் திருக்கோயில் கோட்செங்கட்சோழனால் கட்டப்பட்ட மாடக்கோயில் ஆகும்.
4. இக்கோயிலில் சோழர்கள் மற்றும் பல்லவர்கள் காலத்துக் கல்வெட்டுகள் உள்ளன.
5. இறைவனும் இறைவியும் திருமணக்கோலத்தில் அருள்வதால் திருமணம் விரைவில் நிறைவேற இங்கே ''ஸ்வயம்வர பார்வதி யாகம்'' செய்து பலன் பெற்று வருவது கண்கூடு. காரணம் அத்ரி மஹரிஷி மகளாக அவதரித்த பார்வதி அகஸ்தியர் உபதேசித்த ஸ்வயம்வர மந்திரத்தை தினம்கூறியே ஈசனை விரைவில் அவர் அடைந்தார் என்பது தலவரலாறு.
6. மேலும் பிள்ளைப்பேறு வேண்டுபவர்கள் இங்கு கோபால கிருஷ்ணயாகம் செய்த பலன் பெருகின்றனர்.
7. இறைவன் அகஸ்திய மஹரிஷிக்கு திருமணக்கோலம் காட்டிய தலங்களுள் இதுவும் ஒன்று ஆகும்.
8. கோட்செங்கட்சோழன் வழங்கிய அன்னதானத்தை ஆயிரமாவது நபராக வந்து அமர்ந்து ஏற்ற ஈசன் ''ஆயிரத்துள் ஒருவர்'' என்ற திருநாமத்துடன் தண்டு ஊன்றி முதியவர் வடிவில் உற்சவராகக் காட்சி தருகின்றார்.
9. ஸ்ரீ சிறப்புலி நாயனார் அவதாரம் செய்த, வாழ்ந்து, முக்தியடைந்த திருத்தலமும் இதுவே.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ ஸ்வயம்புநாதர் (எ) ஸ்ரீ தான்தோன்றீஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ கட்க நேத்ரி
தீர்த்தம்	: குமுத தீர்த்தம்
தலமரம்	: கொன்றை, பாக்கு, வில்வம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: புலஸ்தியர், விச்ரவஸ், அகஸ்தியர், நிதாகவர், அத்ரி, குபேரன், சிறப்புலியார், கபிலதேவர்

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ நாவுக்கரசு ஸ்வாமிகள் மற்றும் ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் பெருமானும் இத்தலத்து ஈசனுக்குப் பாமாலை சூட்டிமகிழ்ந்துள்ளனர். ஸ்ரீ கபிலதேவர் இத்தலத்து ஈசன் பற்றி அருளிய பாடல்கள் 11-ஆம்

திருமுறையில் இடம் பெற்றுள்ளன.

இந்த தலத்தில் அருளும் முருகனை, அருணகிரியார் தமது திருப்புகழில் புகழ்ந்து பாடுகின்றார்.

தரிசன காலம் : காலை 06.00 மணி - பகல் 11.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 08.30 மணி வரை

திருக்கோயில் முகவரி :

ஸ்ரீ தான்தோன்றி ஈஷ்வரர் திருக்கோயில்,
ஆக்கூர் - 609 301.
நாகப்பட்டிணம் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் : 04364-280005, 9865809768, 9442419509, 9787709742, 750222850

அமைவிடம் :

திருஆக்கூர் திருமுறைத் திருத்தலமானது நாகப்பட்டிணம் மாவட்டத்தில் மயிலாடுதுறை-தரங்கம்பாடி சாலையில் மயிலாடுதுறையில் இருந்து சுமார் 13 கி.மீ தொலைவில் உள்ளது.

திருத்தலைச்சங்காடு தேவாரப் பாடல் பெற்றத் திருத்தலமும் இத்தலத்திற்கு அருகே சுமார் 3 கி.மீ. தொலைவில் உள்ளது.

ஸ்ரீ கட்க நேத்ரி ஸமேத
ஸ்ரீ ஸ்வயம்புநாத பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- அல்லது ஆயுள் சந்தா (20 வருடம்) ₹1000/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.02.2025. **M. Sridhar**
Signature of the Publisher

PRAVEEN POORVARDH

Just ₹390/- Only

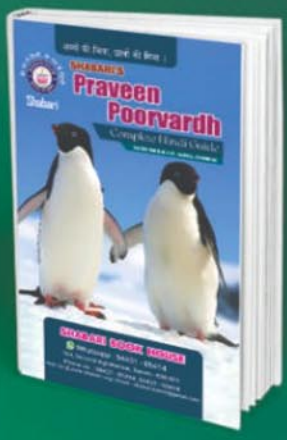

Planned and perfect presentation.
Impressive and easy language.
Presents the Language in its own way.
Perfect companion for Students.
Prefer Shabari Guides.
Feel the difference.
Finest way to pass the exams with confidence.

LEARNER'S DICTIONARY

1024 Pages

Just ₹420.00 Only

35,000 Words

Hindi - Hindi - English - Tamil

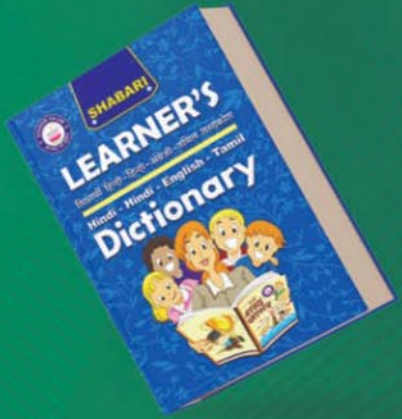

மூன்று மொழிகளின் முத்தான வார்த்தைகள்
முன்னேற்றம் தந்திடும் முத்தான வார்த்தைகள்
மூன்று மொழிகளில் புலமை வாய்ந்திட
முதல் வேலையாய் சபரியை வாங்கிடு
கற்போர்க்கு இது கலங்கரை விளக்கம்
கலைச்சொற்கள் மும்மொழியில் அடக்கம்
கற்போர்க்கு இது மிகவும் நன்று
கற்பிப்போர்க்கும் இதனால் பயன் உண்டு.
தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க மிகவும் நன்று !!

Posted at Salem HPO 636 001. February - 2025

Published on 5th February - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to

Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To _____

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Hindi Speaking Course

தமிழ் மற்றும் ஆங்கிலம் வாயிலாக

SOFT BOUND Just ₹ 255/- Only

HARD Bound Just ₹ 360/- Only

SHABARI BOOK HOUSE

'Shabari Palace', 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
WhatsApp : 94431-65414
Landline Phone : 94433-65414, 98427-65414
visit us @ www.shabari.org